दिनाँक :- 21-07-2020

कॉलेज का नाम :- मारवाड़ी कॉलेज दरभंगा

लेखक का नाम :- डॉ० फ़ारूक़ आज़म (अतिथि शिक्षक)

स्नातक :- द्वितीय खंड (कला)

विषय :- प्रतिष्ठा इतिहास

इकाई :- बारह

पत्र :- चतुर्थ

अध्याय :- (चीन की प्रगति) 1900-1931 ई०

फिर भी यह कहा जा सकता है कि संयुक्त राज्य अमरीका या जापान की तुलना में चीन के औद्योगिक विकास की गति धीमी थी। इसके कई कारण थे। चीन एक विशाल देश था आवागमन के साधन विकसित नहीं थे देश में पूँजी और प्रौद्योगिकी का अभाव था। लोग रूढ़िग्रस्त विचार के थे जो परिवर्तन या औद्योगिकरण को स्वीकार नहीं करते थे साथ ही चीन के हस्तशिल्प काफी विकसित थे

Scanned with CamScanner

गृह उद्योग-धन्धे पर्याप्त थे अर्थव्यवस्था स्वावलम्बी थी। वाणिज्यीय तथा औद्योगिक वर्गों का अभाव था। मुद्रा पद्धति अव्यवस्थित थी। चाँदी के दाम में उतार चढ़ाव के कारण मुद्रा में अस्थिरता थी। सीमा शुल्क पर विदेशी नियंत्रण था। निवेश के लिए दो तत्वों में योगदान किया। प्रथम पश्चिमी देशों का इस पर प्रभाव पड़ रहा था। 19वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध ही पश्चिमी देशों से इसका संपर्क कायम हुआ था। द्वितीय रेल-मार्ग का निर्माण तथा वाष्प चालित जहाजों के इस्तेमाल से यातायात एवं परिवहन की सुविधा बढ़ गई। इनसे औद्योगिक उत्पादनों का अन्तर्देशीय तथा अंतर्राष्ट्रीय बाजार कायम हो गया। अब अर्थव्यवस्था में कृषि गौण तथा कलकारखाने प्रधान हो गए।

आधुनिक ढंग के अनेक चीनी उपक्रम निजी पारिवारिक मामले या साझेदारी के ढंग पर संगठित थे। संयुक्त पूंजी कंपनी

भी प्रचलित थी। आधुनिक बैंक व्यवस्था का भी प्रच
था ये बैंक राष्ट्रीय बैंक संघ (National Bankers Ass
से जुड़े हुए थे। इनमें चीन का बैंक (Bank of China) ociation)
केन्द्रीय सरकार का बैंक था। पूरे देश में इसकी शाखा
थी। संचार बैंक (Bank of communication) संचार
मंत्रालय से संबंधित था। इनके प्रांतीय बैंक थे। चिकियांग
में औद्योगिक बैंक था। नींगपो वाणिज्यीय बैंक (Ningpo
Commercial Bank)
नसक उद्योग बैंक आदि भी थे।
चीन के औद्योगिक विकास में इन बैंकों की महत्व
पूर्ण भूमिका थी।
(घ) श्रेणी प्रथा पर औद्योगिक विकास का प्रभाव
औद्योगिक विकास के श्रेणी प्रथा को अनेक तरह से प्रभावित
किया। प्रथम श्रेणियों का महत्व, उपयोगिता या अनिवार्यता पर
अब प्रश्नचिन्ह लग गया। पहले इनका नियंत्रण स्थानीय या
प्रांतीय नगरों पर था। अब आवागमन के साधनों में समुचि

विकास के फलस्वरूप बाजार विस्तृत हो गया। श्रेणियाँ इन पर नियंत्रण नहीं कर सकती थी। आधुनिक कारखाने प्रणाली में श्रम विभाजन। विशिष्ट उत्पादन पर बल दिए जाने लगा। द्वितीय कारखाना - प्रणाली में वृहत पैमाने पर उत्पादन होने लगा। छोटे-छोटे गृह उद्योग धन्धे इसका सामना नहीं कर सके। उन्हें अपना कारोबार बंद करना पड़ा। तृतीय पुराने व्यवस्था में स्थायी पहले स्वंय मजदूरों के प्रत्यक्ष संपर्क में था। इन मजदूरों की संख्या भी कम होती थी। अतएव नियोक्ता और मजदूरों के बीच भेद करना कठिन था। वे सब संगठित रूप से उत्पादन में लगे हुए थे। श्रेणी (शिल्प) की वस्तु का मूल्य और मजदूर की मजदूरी निर्धारित करती थी। शिल्पियों को श्रेणी के नियमों का पालन करना पड़ता था। किंतु औद्योगिक व्यवस्था में अब यह संभव नहीं रह गया। अब श्रेणी का स्वरूप एक नियोक्ता संघ तथा मजदूर का स्वरूप मजदूर संघ में परिवर्तित होने लगा।

श्रेणी का स्वरूप नियोक्ता संघ में बदल गया तो इसका काम भी बदल गया। १८३३ ई० तक चीन वाणिज्य मंडल का जन्म हो चुका था शंघाई और तिंत्सीन में ऐसा वाणिज्य मंडल स्थापित हो चुके थे। ये वाणिज्य मंडल अंतर्श्रेणी संगठन के रूप में थे। पर जटिल व्यवसायी समुदाय को एक सूत्र के बाँधने का काम करता था। आधुनिक उद्योग में इसका वही काम करना था। यह अपनी एक सीमित क्षेत्र औद्योगिक विवादों उठ खड़े होते थे। इसकी सुनवाई वाणिज्य मंडल की सीमित में होने लगी। यह काम तब और जटिल बन गया जब समिति में मजदूरों के भी प्रतिनिधि रहने लगे। पीकिंग में एक ऐसा संगठन था। जिसे लू-पैन औद्योगिक संघ (Lu-Pan Industrial Union) कहते है चीनी जीवन की महत्वपूर्ण विशेषता समंजन रही है वे सहयोग न कि प्रतिस्पर्द्धा में विश्वास करते है।

Scanned with CamScanner

के मध्ययुगीन श्रेणी प्रथा को पूर्ण रूप से तिलांजलि नहीं दे सकते थे। साथ ही पश्चिमी औद्योगिक क्रांति को आँख बन्द भी नहीं कर सकते थे। उन्होंने औद्योगिक के दोषों से दूर रहने का यथा संभव प्रयत्न किया तथा इसके लाभों को स्वीकार किया। उद्योगपतियों तथा मजदूरों के बीच सौहार्दपूर्ण सम्बंध बना रहे। इसके लिए ध्यान दिया गया किंतु 1930 ई० के बाद मजदूरों की समस्याएँ बढ़ती गई। मजदूर संघों का तेवर बढ़ता गया तथा औद्योगिक विवाद जटिल होते गए।

(घ) मजदूर संगठन तथा उनकी समस्याएँ।

मजदूर संगठन पहले भी होते थे किंतु उनका कारण किसी तत्काल समस्या का समाधान करना होता था। इसके लिए सामूहिक कार्रवाई की जाती थी। इसके बाद संगठन समाप्त हो जाता था। मजदूरों का कोई स्थायी संगठन नहीं होता था। कारण यह कि इनकी श्रेणियाँ होती थीं जो इनकी सारी

समस्याओं का समाधान करती थी। किंतु 1918 ई० के बाद पश्चिमी ढंग के श्रम संगठन बनने लगे। इस तरह का एक संगठन 1919 ई० में बना जिसे चीनी मजदूर उन्नयन संघ (The Union for the Improvement of Chines Labour) कहते हैं। इसका उद्देश्य पारस्परिक न्याय एवं सुरक्षा था। इसका कार्य नियोक्ताओं से लड़ना नहीं था। यह राष्ट्रीय स्तर का मजदूर संघ था जिसकी शाखाएँ पूरे देश में थी। शंघाई, कैंटन, तिंत्सीन तथा अन्य औद्योगिक नगरों में इसी तरह संगठन खोले गये। प्रारम्भ में इन मजदूर संगठनों का कोई राजनीतिक उद्देश्य नहीं था। वे केवल मजदूरों की विभिन्न समस्याओं का समाधान चाहते थे। मजदूरों की समस्या में उचित मजदूरी या निमनतम मजदूरी कार्यावधि, जीवन बीमा, दुर्घटना ग्रस्त होने पर क्षतिपूर्ति भविष्य निधि इत्यादि थी।